साहित्य अकादेमी द्वारा लेखक से भेंट कार्यक्रम आयोजित

लेखक हमेशा विद्यार्थी रहता है : ममता कालिया

देवेन्द्र वाणी
बीकानेर

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा आज आयोजित 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम में प्रसिद्ध लेखिका ममता कालिया ने पाठकों से संवाद किया। उन्होंने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में खुलकर बात की और कहा कि बचपन में उन्हें अपने सांवले रंग के कारण अपमान का सामना करना पड़ा, क्योंकि उनकी बड़ी बहन बहुत सुंदर थीं। उन्होंने इस अपमान और गुस्से को लेखन के माध्यम से व्यक्त किया और स्वयं को साबित करने की ठानी। उन्होंने बताया कि उनके पिता की किताबें उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहीं और किताबों से मिली चेतना ने उन्हें आत्मविश्वास दिया। ममता ने आगे बताया कि उनका शुरुआती लेखन अंग्रेजी में था, क्योंकि उन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया था। लेकिन इलाहाबाद में रहने के दौरान उन्हें हिंदी में

लिखने की प्रेरणा मिली, जिसमें उनके पति रवींद्र कालिया का भी बड़ा योगदान था। लेखन एक ऐसी दुनिया है जिसमें कोई तय नियम नहीं होते। कभी-कभी हमारे अपने बनाए किरदार ही हमें असफल कर देते हैं। वर्तमान समय में पठन-पाठन के कई नए माध्यम आने पर उन्होंने कहा कि आभासी मंचों से संतुष्टि नहीं मिलती, जबकि छोटे शहरों में अभी भी अध्ययनशीलता और सृजनशीलता की परंपरा जीवित है। ममता कालिया ने अनुवाद के महत्व पर भी चर्चा की और कहा कि हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच पर स्थापित करने के लिए अनुवाद जरूरी हैं, लेकिन वर्तमान में हिंदी पुस्तकों के अनुवाद पर उतनी गंभीरता से काम नहीं हो रहा है। कार्यक्रम में ममता ने अपनी कुछ कविताएँ और कहानियों का पाठ भी किया। कविताओं में स्त्री के अकेलेपन और रिश्तों के दरकने का चित्रण था, जबकि कहानियों में सेल्फी के दुष्परिणाम और मोबाइल पर अत्यधिक निर्भरता पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया, जबकि स्वागत और धन्यवाद ज्ञापन सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। कई प्रसिद्ध साहित्यकार और रंगकर्मी इस अवसर पर उपस्थित रहे।